

संसाधन कक्षा बनाम बाह्य समर्थन

रीना रयाल

यह लेख इस बात का विश्लेषण करता है कि संसाधन कक्ष बनाए रखने में नियमित शिक्षक, प्रधानाध्यापक और प्रबन्धक वर्ग किस प्रकार से सहायता कर सकते हैं।

पिछले कई वर्षों से यह बात देखने में आई है कि शिक्षकगण विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को नियमित कक्षा में समावेशित करने की नीति के बारे में उदासीन होते हैं। इसके कई कारण हैं जैसे इन बच्चों को सीखने–पढ़ने में लगने वाला समय, खराब प्रदर्शन, अन्य बच्चों पर इसका प्रभाव आदि और साथ में उन्हें यह भी लगता है कि ऐसी स्थितियों का सामना करने के लिए उनका प्रशिक्षण और कौशल पर्याप्त नहीं है। शिक्षकों का नजरिया बच्चों के अधिगम परिणामों को प्रभावित करता है[1] और अगर नजरिया नकारात्मक हो तो बात गम्भीर हो जाती है। संसाधन कक्ष एक ऐसा कक्षा कक्ष है जहाँ पर बच्चे IEP (Individual Educational Programme) में बताए गए लक्ष्यों को हासिल करने के लिए व्यक्तिगत रूप से अकादमिक शिक्षण प्राप्त कर सकते हैं जिससे उन्हें कक्षा में अपना प्रदर्शन बेहतर करने के तरीकों को सीखने में मदद मिलेगी। पठन वैकल्य (dyslexiaa) और अधिगम सम्बन्धी अन्य असुविधाओं वाले बच्चों के लिए संसाधन कक्ष खासतौर पर फायदेमन्द होते हैं क्योंकि उन्हें प्रत्यक्ष व्यक्तिगत शिक्षण की जरूरत होती है। संसाधन कक्ष में बच्चों को एक सकारात्मक माहौल में सीखने का मौका मिलता है। भारत में अभी तक संसाधन कक्ष की सुविधा या अधिगम समर्थन सुविधा की अवधारणा का प्रचलन नहीं हो पाया है। हालाँकि इस मामले में जागरूकता बढ़ी है लेकिन अभी भी प्रधानाध्यापक और प्रबन्धक वर्ग संसाधन कक्ष व शिक्षा के क्षेत्र के बीच की महत्त्वपूर्ण कड़ी को देख नहीं पा रहे हैं। अधिकांश स्कूल यह सोचते हैं कि वे संसाधन कक्ष के बिना भी काम चला सकते हैं क्योंकि विशेष शिक्षा को एक ऐसे विशेष क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो बहुत कम बच्चों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए है, जो स्कूल पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डालती है और इसलिए वह वैकल्पिक है। सूक्ष्म विश्लेषण से यह बात साफ हो जाएगी कि शैक्षिक समस्याओं को जल्दी पहचानना कितना जरूरी और फायदेमन्द है और उन्हें जल्दी सुलझाने से न केवल अधिगम समर्थन की अपेक्षा रखने वाले कुछ बच्चों के वरन पूरी कक्षा के प्रदर्शन में सुधार हो सकता है।

संसाधन कक्ष का वास्तविक उद्देश्य

संसाधन कक्ष का सही अर्थ न जानने की वजह से उसे एक ऐसा स्थान मान लिया जाता है जहाँ 'बेकाबू' बच्चों को लाकर छोड़ दिया जाए। नियमित शिक्षकगण समझते हैं कि संसाधन कक्ष कक्षा की मुसीबतों का विकल्प है। लेकिन संसाधन कक्ष के अनेक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हैं जैसे –

- संसाधन कक्ष का एकमात्र उद्देश्य है व्यक्तिगत और नवाचारी शिक्षण विधियों के माध्यम से ऐसे बच्चे की अन्तर्निहित क्षमता को बाहर निकालना जिसका प्रदर्शन टेस्ट या परीक्षा में अपनी वास्तविक क्षमता से कम है।
- संसाधन कक्ष में इस बात की अद्भुत और अहम क्षमता है कि अधिगम की कठिनाइयों को जल्द से जल्द पहचानकर उसका आकलन कर सके और किण्डरगार्टन के स्तर से ही उन समस्याओं के समाधान हेतु कार्यक्रमों की योजना बनाए।
- इससे उन बच्चों की संख्या काफी कम हो जाती है जिनमें द्वितीयक कारणों से अधिगम की समस्याएँ पैदा होती हैं। संसाधन कक्ष से उन बच्चों को भी मदद मिलती है जिनमें ये समस्याएँ देर से पैदा होती हैं।
- संसाधन कक्ष एक अनजान और भुला दी गई कड़ी है – नियमित शिक्षकों के दुखों का जवाब है – जैसे

[1] *Good, T.L., & Brophy, J.E. (1997). Looking in classrooms (seventh edition). New York: Longman.*

गणित का वह शिक्षक जो इस बात को लेकर परेशान है कि बच्चों में इबारती सवालों को समझने का कौशल कैसे विकसित किया जाए या गुणन सिखाने के विभिन्न तरीके कौन–से हैं या फिर इतिहास का शिक्षक जो प्रत्येक पाठ की माइण्ड मैपिंग न कर पा रहा हो।

- संसाधन कक्ष सभी विषयों के सभी पाठों के लिए कक्षा की गतिविधियों का खजाना है। अगर नियमित शिक्षकों और संसाधक शिक्षकों के बीच एक व्यवस्थित अन्तःक्रियात्मक प्रक्रिया बना दी जाए तो विचारों का आदान–प्रदान, ज्ञान का आदान–प्रदान और रचनात्मकता एक ऐसी स्थिति पैदा कर सकती है जहाँ हो सकता है कि संसाधन कक्ष की जरूरत ही न पड़े, क्योंकि हर शिक्षक उन तरीकों से परिचित हो गया होगा जिनके द्वारा वह कक्षा में हर जरूरतमन्द विद्यार्थी की व्यक्तिगत रूप से सहायता कर पाएगा।

संसाधन कक्ष की सफलता में बाधक मानसिकता

संसाधन कक्ष के अस्तित्व को बनाए रखने में कई बाधाएँ हैं। स्कूल प्रबन्धन को खर्चे का भय होता है, नियमित शिक्षक इस बात से डरते हैं कि उन्हें अपनी कक्षाओं को चलाने के तरीकों के बारे में सीखने के लिए अतिरिक्त कार्यशालाओं में भाग लेना पड़ेगा, माता–पिता को यह भय होता है कि उनके बच्चों पर ठप्पा लग जाएगा और बच्चे इसलिए डरते हैं कि वे न केवल उपहास की वस्तु बन जाएँगे बल्कि उन्हें उनके पसन्दीदा कालांशों जैसे कला, संगीत, खेल आदि में संसाधन कक्ष में भेज दिया जाएगा। इसलिए यह कहना उचित होगा कि चुनौती हर किसी की मानसिकता में है।

- **प्रधानाध्यापक और स्कूल प्रबन्धन** : प्रधानाध्यापक और स्कूल प्रबन्धन को चाहिए कि वे दीर्घकालिक लाभ का ध्यान रखते हुए एक या दो विशेष शिक्षकों को नहीं बल्कि विशेष शिक्षकों की टीम में निवेश करें। एक ऐसी टीम जो स्कूल के सभी शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षण दे सके ताकि अलग–अलग प्रोफाइल वाले बच्चों की मदद करने में शिक्षकों की क्षमता बढ़े। आज हर कक्षा में विभिन्न प्रकार के बच्चे होते हैं जिनका ध्यान रखा जाना चाहिए। अगर स्कूल चाहता है कि उसके विद्यार्थियों के परीक्षाफल का स्तर बढ़े, शिक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को वह ऊँचा उठाए और एक 'अच्छे' स्कूल के रूप में उसे मान्यता मिले तो उसे इस बात का ध्यान रखना होगा कि बच्चों की समस्या को जल्दी पहचाने, अनौपचारिक आकलन करे और उपचारात्मक सहायता प्रदान करे। मुश्किल तब पैदा होती है जब प्रधानाध्यापक अधिगम की असमर्थता से अनभिज्ञ होते हैं और उनमें यह जागरूकता नहीं होती कि यह समस्या बढ़ रही है। जब स्कूल में विशेष शिक्षा के शिक्षकों की आवश्यकता को औषधि के रूप में न लेकर केवल विकल्प मान लिया जाता है और उनके वेतन को अतिरिक्त खर्चे के रूप में देखा जाता है तो ऐसी मानसिकता को अनुदार दृष्टिकोण न कहें तो क्या कहें? दूसरी ओर, यदि संसाधन कक्ष को प्रधानाध्यापक और प्रबन्धन वर्ग का समर्थन मिले तो साल–दर–साल कई ऐसे बच्चों को जरूरी सहायता मिलती रहती है जो शायद इसके अभाव में अगली कक्षा तक न पहुँच पाते। तब संसाधन कक्ष एक ऐसा चिकित्सालय बन जाता है जहाँ शीघ्र उपचार को अच्छा उपचार माना जाता है। देखने में आया है कि संसाधन कक्ष के प्रति प्रबन्धन वर्ग के रवैये से बहुत फर्क पड़ता है। अधिगम की असमर्थता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षक किन तरीकों का इस्तेमाल करते हैं, उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं–इन सारी बातों पर प्रधानाध्यापक के समर्थन का बहुत असर पड़ता है[2]। जब शिक्षकों को स्कूल प्रशासन का सहयोग मिलता है तब वे असमर्थ बच्चों के साथ अधिक समायोजन करते हैं[3]।

- **नियमित शिक्षकों का नजरिया** : अधिगम सम्बन्धी असमर्थता वाले विद्यार्थियों को कक्षा में एकीकृत करने की मुख्य बाधाओं में से एक है शिक्षक का नजरिया[4]। यह बात बहुत निराशाजनक है क्योंकि

[2] *Ross-hill(2009) Teacher attitude towards inclusion practices and special needs students. Journal of Research in Special Educational Needs Volume 9, Issue 3, November 2009*

[3] *Soodak, L.C.; Podell, D.M.; Lehman, L.R. (1998). Teacher, student, and school attributes as predictors of teachers' responses to inclusion. Journal of Special Education, 31 (4), pp. 480-498*

[4] *Avramidis, E. & Norwich, B. (2002). Mainstream teachers' attitudes towards inclusion/integration: a review of the literature. European Journal of Special Needs Education, 17(2), 1-19.*

बच्चे को अधिगम में सहायता प्रदान करने की पूरी प्रक्रिया अलग–थलग रूप में नहीं हो सकती। यह तो एक शृंखला है जिसमें अगर एक कड़ी भी कमजोर हो तो शृंखला टूट जाती है। जब इस बात की पहचान हो जाती है कि किसी बच्चे में अधिगम सम्बन्धी असमर्थता है तो उचित यही है कि उसकी सहायता की जाए ताकि उसके अकादमिक प्रदर्शन में सुधार हो सके। अगर सामान्य शिक्षकों में यह प्रतिबद्धता नहीं है तो संसाधन कक्ष टिक नहीं पाएगा। यदि सभी शिक्षकों में संसाधन कक्ष के प्रति एक उत्साही रवैया पैदा करना है तो यह जरूरी है कि शिक्षकों को कक्षा में समावेशी पद्धति, सेवा पूर्व प्रशिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के बारे में नियमित अन्तर्दृष्टि के माध्यम से सकारात्मक अनुभव प्रदान करवाए जाएँ। एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन सुझाता है कि समावेशन के प्रति शिक्षक का नजरिया, समावेशी कक्षा में उनके पिछले अनुभवों से प्रभावित होता है[5], इससे ज्ञात होता है कि संसाधन कक्ष और इससे सम्बन्धित गतिविधियों का महत्त्व कितना ज्यादा है।

- **शिक्षक प्रशिक्षण**

  भारत में शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स विशेष शिक्षा की जरूरतों को पर्याप्त रूप से सम्बोधित करने में नाकाम रहे हैं। शिक्षक या तो विभेदक शिक्षण से अनजान हैं और अगर जानते भी हैं तो इसे अपनाते नहीं। संसाधन कक्ष की सफलता के लिए यह जरूरी है कि भले ही नियमित शिक्षक अधिगम सम्बन्धी असमर्थता के क्षेत्र में प्रशिक्षित न भी हों, पर उन्हें इसके बारे में कुछ ज्ञान तो होना ही चाहिए। वर्तमान प्रशिक्षण में शिक्षकों को अधिगम सम्बन्धी असमर्थता वाले बच्चों के बारे में कुछ नहीं बताया जाता। इसलिए धारणा यह है कि संसाधन कक्ष एक ऐसा कमरा है जहाँ विशेष शिक्षक उन बच्चों की देखभाल करते हैं जो कक्षा के स्तर तक नहीं पहुँच पाते, और कक्षा के शिक्षक ऐसे बच्चों पर 'बुरा व्यवहार करने वाले बच्चे' का ठप्पा लगा देते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि इन बच्चों को वाकई सीखने में मुश्किल पेश आती है, उन्हें पढ़ने, स्पेलिंग और लिखने में दिक्कत होती है। शिक्षक ऐसा इसलिए सोचते हैं क्योंकि वे बच्चों के लक्षणों को ठीक तरह से पहचान पाने में असमर्थ होते हैं। संसाधन कक्ष के प्रति एक अवमानना का भाव है जो बच्चे के सुधार को कम महत्त्व देता है। आज विशेष शिक्षा की जरूरत वाले बच्चे हर कक्षा में मौजूद हैं और यह संख्या बढ़ रही है, इसलिए सभी प्रशिक्षण संस्थानों में पाठ्यक्रम में सुधार और उसे अद्यतन करना बहुत आवश्यक है। जिन स्कूलों में ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है जो अधिगम सम्बन्धी असमर्थता वाले बच्चों को पढ़ाने के इच्छुक हैं, वहाँ संसाधन कक्ष के प्रति दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक होता है। इस वजह से संसाधन कक्ष, कक्षा और माता–पिता के बीच प्रभावी सम्प्रेषण सम्भव हो पाता है। यही नहीं इससे कक्षा का वातावरण भी सहायतापूर्ण हो जाता है क्योंकि शिक्षक अधिक लचीले, धैर्यवान, किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार और उत्साह बढ़ाने वाले होते हैं। जब कक्षा शिक्षक सहायक होते हैं तो बच्चे को अधिक समय, सहायता और विकल्प मिलते हैं। ऐसे शिक्षक संसाधन कक्ष के साथ मिलकर कार्य करते हैं और आकलन के लिए बच्चों को पहचानने में मदद करते हैं, कार्यनीतियों को साझा करते हैं तथा अधिगम सम्बन्धी असमर्थता वाले बच्चों की अकादमिक सफलता के लिए काम करते हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अधिगम में समर्थन कोई विकल्प नहीं है – यह हर बच्चे का अधिकार है। यह एक सच्चाई है कि कक्षा में विभेदक शिक्षण एकमात्र विकल्प है और ऐसी स्थिति में संसाधन कक्ष वह आधार है जो न केवल विशेष शिक्षा से सम्बन्धी विभिन्न सेवाएँ प्रदान करता है बल्कि सामान्य शिक्षा को भी अपने दायरे में ले आता है।

[5] *Leatherman1, Jane M. Teachers' Attitudes Toward Inclusion: Factors Influencing Classroom Practice. Journal of Early Childhood Teacher Education Vol 26(1) 2005*

डॉ. रीना रयाल अधिगम असमर्थता के क्षेत्र में एक संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक और विशेष शिक्षिका हैं। वे वृन्दावन एजुकेशन ट्रस्ट, जयनगर, बेंगलूरु, के साथ जुड़ी हुई हैं जो अधिगम सम्बन्धी असमर्थता वाले बच्चों के शिक्षण, प्रशिक्षण और आकलन का केन्द्र है और पिछले **15** वर्षों से बच्चों, शिक्षकों और माता–पिता के साथ कार्यरत है। उन्होंने हाल ही में शिक्षकों और अभिभावकों के लिए 'The Indian Resource Room' शीर्षक पुस्तक लिखी है। वे शिक्षा से सम्बन्धित मुद्दों पर 'डेक्कन हेराल्ड' में नियमित रूप से लिखती रहती हैं। उनसे drreenaryall@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल